वैज्ञानिक मनोवृत्ति एवं मानव जीवन

26

प्रो0 आभा पाल

सारांश

वैज्ञानिक मनोवृत्ति की अवधारणा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का आधार प्रस्तुत करती है। अतीतकाल से ही भारतीय ज्ञान परंपरा में इस विचारधारा की प्रमुखता रही है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति चिंतन का तरीका है जो तर्क, प्रयोग एवं परीक्षण पर आधारित है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में वेदों, उपनिषदों, जैन एवं बौद्ध चिंतन परंपरा में वैज्ञानिक मनोवृत्ति की यह अवधारणा प्रवाहित होती रही है। चिंतन की इस मौलिक परंपरा से भारत का अतीत से लेकर वर्तमान जीवन आपलावित है। यह वर्तमान में जहाँ राजनीतिक शुचिता, चिंतनपरक शिक्षा, सम्यक सामाजिक विकास, अतार्किक मान्यताओं के उन्मूलन तथा नारियों की स्थिति के उन्नयन के लिए आवश्यक है वहीं दूसरी तरफ वैश्विक समस्याओं यथा आतंकवाद, युद्ध, नस्ली भेदभाव, नवसाम्राज्यवाद प्रवत्ति एवं पर्यावरणीय संकट के खिलाफ नया जीवन दर्शन लेकर आती है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति की अवधारणा के विश्लेषण द्वारा इसके स्वरूप, प्रभाव एवं महत्व को रेखांकित किया जाना समीचीन होगा।

मुख्य शब्दः *वैज्ञानिक, मनोवृत्ति, सामाजिक, विकास, वैश्विक समस्याओं, नवसाम्राज्यवाद, पर्यावरणीय*

परिचय

वैज्ञानिक मनोवृत्ति चिंतन का एक तरीका है जो तर्क, प्रयोग एवं विश्लेषण को दैनिक जीवन का अंग मानती है। इसमें मनुष्य की चेतना पूर्णतः विज्ञान स्वरूप हो जाती है। यह चेतना पूर्वाग्रहों एवं अंधविश्वासों से मुक्त होकर सत्य को खोजने का दृष्टिकोण है। वैज्ञानिक चेतना को व्यवहार में लागू करने, समस्याओं का निराकरण करने और समाज एवं राष्ट्र के समग्र विकास के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति का एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि यह दूसरों के प्रति खुले विचारों वाली और उसके सहिष्णु होने में मदद करती है। इसका उद्देश्य धर्मनिरपेक्षता, मानवतावाद और सुधार की भावना को विकसित करने में मदद करना है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति केवल वैज्ञानिकों की संपत्ति ही नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को इसे अपनाने की आवश्यकता है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति के लिए विज्ञान

प्रो0 आभा पाल
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेन्द्र नगर, लखनऊ
Book Name : Interdisciplinary Pathways towards Sustainable Development
Pub:Anu Books. ISBN:9789378470097, DOI:10.31995/Book.AB364-J226.Ch.26

का अध्येता होना आवश्यक नहीं है, हो सकता है कि एक वैज्ञानिक अंधविश्वासी हो, जबकि एक आध्यात्मिक चेतना सम्पूर्ण व्यक्ति वैज्ञानिक मनोवृत्ति की चेतना से सम्पूर्ण हो सकता है। मध्यकालीन आध्यात्मिक जगत में कबीर एक ऐसे ही व्यक्ति थे। आधुनिक काल में इस चेतना को राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान व्यापक महत्व मिला, जिसका परिणाम हुआ कि एक सशक्त एवं लोकतांत्रिक चेतना से सम्पूर्ण राष्ट्र का निर्माण संभव हो सका। वैज्ञानिक मनोवृत्ति की चेतना को राष्ट्र की आत्मा में संचारित करने का श्रेय हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू को जाता है। उन्होंने अपनी पुस्तक भारत एक खोज (Discovery of India) में वैज्ञानिक मनोवृत्ति के सम्बन्ध में लिखा है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मनोवत्ति जीवन जीने का एक तरीका है, सोचने की एक प्रक्रिया है, कार्य करने का एक तरीका है और अपने साथी मनुष्यों के साथ जुड़ने का एक तरीका है।

वैज्ञानिक मनोवृत्ति की चेतना सामाजिक जीवन के विकास एवं उन्नयन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण एक तर्कसंगत एवं साक्ष्यों पर आधारित सोच है, जो अतार्किक मान्यताओं को अस्वीकार करते हुए मानवीय मूल्यों पर आधारित मानवतावादी समाज के निर्माण में योगदान करती है। यह मनुष्य के समग्र विकास पर बल देती है। यह किसी भी प्रकार के भेदभाव को अस्वीकार करती है। यह प्रकृतिप्रदत्त जीवन मूल्यों पर आधारित जीवन व्यतीत करने की बात करती है। यह तो विदित तथ्य है कि अतीत से लेकर वर्तमान तक के जीवन में जब भी वैज्ञानिक मनोवृत्ति को प्रमुख स्थान मिला, तब समाज का बहुमुखी विकास हुआ। इस संदर्भ में चाहे हमारे अतीत का आध्यात्मिक चिंतन हो, मध्यकाल का धार्मिक आंदोलन हो या वर्तमान का स्वतन्त्रता आंदोलन इन सभी ने मानवीय मूल्यों को अपने जीवन–दर्शन का साध्य सदैव बनाए रखा।

वैज्ञानिक मनोवृत्ति जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करने वाली चेतना है। इस चेतना का प्रयोग जीवन के सभी क्षेत्रों में किया जा सकता है। मनुष्य के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों में एक प्रमुख समस्या है स्वास्थ्य को लेकर। मानव जीवन में बीमारियों के इलाज और जीवन–शैली के चयन में अंधविश्वास के बजाय साक्ष्य आधारित तर्क एवं तार्किक सोच का उपयोग करने पर वैज्ञानिक चेतना बल देती है। आज भी विकास के इस चरण में देश के अनेक क्षेत्रों में बीमारियों के इलाज के लिए तंत्र–मंत्र एवं झाड़–फूँक का प्रचलन है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति इन अतार्किक मान्यताओं के खिलाफ तार्किक एवं प्रकृति–आधारित चिकित्सा प्रणाली का समर्थन करती है।

मानव जीवन में साहित्यिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य जगत में वैज्ञानिक मनोवृत्ति का अर्थ है रूढ़ियों, अंधविश्वासों और बिना जाँचे–परखे तथ्यों को स्वीकार करने के बजाय तर्कसंगत सोच एवं साक्ष्य–आधारित वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाना तथा साहित्य लेखन में उसका उपयोग करना। यह चेतना साहित्य को यथार्थवादी, मानवीय एवं सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ प्रश्न करने वाला बनाती है। इस चेतना से प्रेरित होकर साहित्य रचना करने वाले साहित्यकारों को कल्पना के स्थान पर सामाजिक जीवन की

विसंगतियों का यथार्थ चित्रण करने का आधार प्राप्त होता है। हमारे साहित्य में रूढ़ियों का खंडन इसी मनोवृत्ति का परिणाम है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति के परिणामस्वरूप साहित्य की मानवतावादी दृष्टि निर्मित होती है। यह मानवतावादी वैज्ञानिक सोच न केवल तकनीकी ज्ञान के लिए आवश्यक है बल्कि सामाजिक न्याय और समानता के लिए भी एक साधन के रूप में कार्य करती है। साहित्य की विधाओं यथा कविताओं, कहानियों, नाटकों, उपन्यासों में सामाजिक एवं अमानवीय रूढ़ियों का उल्लेख करते हुए उसका विरोध किया गया है। मध्यकालीन संत कबीरदास जी ने सभी प्रकार की अतार्किक रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों का विरोध अपने जागृत विवेक के आधार पर किया। उन्होंने तत्कालीन समय में प्रचलित सभी सामाजिक बुराइयों का तिरस्कार करते हुए श्रेष्ठ मानवीय दर्शन का प्रतिपादन किया। उनका जागृत विवेक वैज्ञानिक चेतना का श्रेष्ठ उदाहरण है। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी ने लिखा है सच्चा साहित्य सभी अप्रिय अवस्थाओं का अंत कर देता है।(1)

वैज्ञानिक मनोवृत्ति का आर्थिक क्षेत्र में भी महत्व है। आर्थिक क्षेत्र में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का तात्पर्य है अंधविश्वास की बजाय तर्क, साक्ष्य आधारित सोच को अपनाना। यह रूढ़िवादी प्रक्रिया को त्यागकर वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा उत्पादकता बढ़ाने एवं ए.आई. जैसी नई तकनीकों को अपनाकर रोजगार सृजन पर बल देती है। उल्लेखनीय है कि देश में गरीबी, बेरोजगारी एवं असन्तुलित विकास की स्थिति है। ऐसी स्थिति में तकनीकी साधनों का कुशल उपयोग वैज्ञानिक चेतना के आधार पर किया जाना आवश्यक है। गरीबी के निराकरण के लिए आवश्यक है कि तकनीकी साधनों को अपनाकर रोजगार के अवसर पैदा किए जाएँ। इसके लिए आवश्यक है कि स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक रोजगार का ऐसा स्वरूप निर्मित किया जाए कि व्यक्ति को अपनी योग्यता के अनुसार कार्य सुगमता से प्राप्त हो सके। इस संदर्भ में राज्य एवं केन्द्र स्तर पर विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है जिसमें प्रमुख हैं प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, स्किल इंडिया मिशन, आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना, प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, पीएम स्व–निधी योजना, दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय योजना राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन योजना महत्वपूर्ण हैं। उल्लेखनीय है कि केन्द्र सरकार द्वारा एक जुलाई सन् दो हजार पच्चीस को प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना के नाम से रोजगार से जुड़ी प्रोत्साहन योजना शुरू की गई है जिसका उद्देश्य विनिर्माण क्षेत्र पर विशेष ध्यान देते हुए सभी सेक्टरों में रोजगार सृजन, रोजगार क्षमता और सामाजिक सुरक्षा को बढ़ावा देना है।

वैज्ञानिक मनोवृत्ति की सामाजिक जीवन के विकास एवं उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय सामाजिक जीवन में अनेक रूढ़ियाँ एवं अमानवीय प्रथाएँ विद्यमान थीं जो मानव की गरिमा को ठेस पहुँचा रही हैं, जैसे सतीप्रथा, बालविवाह, धार्मिक अंधविश्वास आदि उदाहरण के रूप में मानी जा सकती हैं। आज भी भारतीय जीवन में अंधविश्वास एवं रूढ़ियों के कारण देश के अनेक भागों में जादू–टोनों के नाम पर महिलाओं को डायन मानकर उनको शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति की चेतना से सम्पूर्ण शिक्षा

व्यवस्था को लागू कर इस अमानवीय प्रथा से समाज को मुक्त करने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई है। विकास के बावजूद भी आधुनिक काल में बाल–विवाह एक कुरीति के रूप में देश के विभिन्न भागों में प्रचलित है। यह न केवल सामाजिक प्रगति में बाधा है बल्कि व्यक्तिगत तौर पर बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है। बालविवाह का सबसे विपरीत प्रभाव बालिकाओं पर पड़ता है। इसके कारण वह शारीरिक रूप से कमजोर हो जाती है तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों को वहन करने के कारण शिक्षा जैसी बुनियादी जरूरतों से वंचित हो जाती है।(2)

वर्तमान में मनुष्य ने सफलता के नए प्रतिमान स्थापित किए हैं, परन्तु उसकी समस्याएँ भी बहुत जटिल एवं बहुआयामी हो गई हैं। आधुनिक जीवन की एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या भ्रष्टाचार है। इसके कारण एक तरफ जहाँ संसाधनों का दुरूपयोग हो रहा है वहीं राष्ट्र की प्रगति में यह एक बहुत बड़ी बाधा भी है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति की चेतना पारदर्शिता की व्यवस्था अपनाने पर जोर देती है। यह व्यक्ति को उसकी योग्यता एवं क्षमता का सही आकलन कर कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। इस संदर्भ में डिजिटल इंडिया के द्वारा वैज्ञानिक प्रयोगों को बढ़ावा देकर एक तार्किक सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के लिए वातावरण तैयार किया जा रहा है।

आधुनिक जीवन की जटिल समस्याओं में सांप्रदायिक समस्या राष्ट्र के समक्ष एक चुनौती के रूप में आज भी विद्यमान है। यह समस्या राष्ट्रीय एकता के लिए बहुत बड़ी बाधा है। वस्तुतः सांप्रदायिक समस्या संकीर्ण धार्मिक एवं सामाजिक सोच का दुष्परिणाम है। जब व्यक्ति धर्म के मूल स्वरूप (मानव कल्याण) को भूलकर अपने धर्म एवं समाज को ही श्रेष्ठ मानने लगता है, तो ऐसी मनोवृत्ति के कारण सांप्रदायिक समस्या उत्पन्न होती है, जो सामाजिक एवं राष्ट्र के विकास को दुष्प्रभावित करती है तथा वैश्विक स्तर पर राष्ट्र की छवि को धूमिल भी करती है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति की चेतना धर्म के मूल स्वरूप अर्थात मानवता के कल्याण को स्वीकार करती है। यह चेतना धार्मिक संकर्णीता से ऊपर उठकर सभी को मानवीय धरातल पर एक समान स्वीकार करती है।(3)

वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप मानव जीवन में प्रयुक्त होने वाले नए–नए भौतिक उपकरणों का निर्माण कर लिया गया है और इसे विकास का प्रतिमान मान लिया गया है, परन्तु उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के कारण मानव जीवन जटिल समस्याओं से घिर भी गया है। इसी उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के कारण अनेक मानवीय एवं पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो गए हैं। अतिशय उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के कारण पर्यावरणीय प्रदूषण का प्रकोप बढ़ रहा है। इस प्रदूषण का इतना विपरीत प्रभाव पड़ा है कि जो बड़े–बड़े शहर विकास के प्रतिमान माने जाते थे, आज वे रहने लायक नहीं रह गए हैं। इन शहरों में वायु की गुणवत्ता इतना खराब हो गई है कि मनुष्य श्वास लेने में कठिनाई महसूस कर रहा है। इसने जीवन को मुश्किल में डाल दिया है। यहाँ यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि प्रदूषण की समस्या या पर्यावरण का संकट एक देशीय न होकर वैश्विक है। यह संसाधनों

के अंधाधुंध एवं अवैज्ञानिक प्रयोग के परिणामस्वरूप मानव जनित समस्या है, जिसका परिणाम है वैश्विक तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा, बाढ़, सूखा, भूस्खलन एवं जंगलों में दावानल का बढ़ता प्रकोप। उपरोक्त के दृष्टिगत वैज्ञानिक मनोवत्ति का महत्व स्वतः सिद्ध हो जाता है। यह चेतना उपभोक्तावादी प्रवृत्ति का प्रतिकार करती है तथा संयमपूर्ण जीवन–दर्शन को प्रेरित करते हुए संसाधनों के संयमित प्रयोग पर बल देती है।

लोकतंत्र में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें वैज्ञानिक मनोवृत्ति का अर्थ है अंधविश्वासों के बजाय तर्क, प्रमाण एवं आलोचनात्मक सोच के आधार पर निर्णय लेना। यह नागरिकों को जागरूक, जिज्ञासु एवं प्रतिक्रियावादी रूढ़ियों से मुक्त करता है, जो एक जीवंत लोकतंत्र के लिए अनिवार्य है। लोकतंत्र में यदि वैज्ञानिक मनोवृत्ति को बढ़ावा दिया जाए तो राजनीति को अनेक नकारात्मक तत्वों से मुक्त किया जा सकता है। इसके स्वीकार से राजनीति में अपराधियों का प्रवेश रोका जा सकता है, इतना ही नहीं यदि तर्क आधारित यह चेतना समस्त राष्ट्र के नागरिकों में व्याप्त हो जाए तो राजनीति में जातिवाद, सांप्रदायिकता एवं क्षेत्रीयता की भावना स्वतः समाप्त हो जाएगी।(4)

वैज्ञानिक मनोवृत्ति का प्रशासन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। प्रशासन में वैज्ञानिक मनोवृत्ति का अर्थ है निर्णय लेने में तर्कसंगतता, तथ्यों एवं मानवतावाद को प्राथमिकता देना, न कि अंधविश्वासों एवं पूर्वाग्रहों को। यह मनोवत्ति प्रभावी, पारदर्शी एवं परिणाममुखी नीतियों को बनाने में मदद करती है। एक आधुनिक एवं प्रगतिशील देश के लिए प्रशासनिक स्तर पर वैज्ञानिक मनोवृत्ति का होना अनिवार्य है, जो तर्कसंगत एवं विवेकशील विचार के माध्यम से विकास एवं नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देता है।

मानव के समक्ष आज अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं, जिसमें एक समस्या है वैश्विक आतंकवाद। आतंकवादी घटनाओं के फलस्वरूप व्यापक पैमाने पर जनधन की हानि होती है। विश्व के अनेक देश इस प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इसमें कभी स्वतन्त्रता के नाम पर तो कभी धर्म के नाम पर झूठे नारे गढ़े जाते हैं। भारतीय उप महादीप में इस प्रकार की समस्या मौजूद है। इन आतंकवादी गतिविधियों को विभिन्न देशों द्वारा समर्थन दिया जाता है, जिसके कारण समस्या और भी जटिल हो जाती है। आतंकवादी घटनाएँ समाज और राष्ट्र के विकास में एक बड़ी बाधा हैं। यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि अंधविश्वासी एवं अतार्किक लोगों में वैज्ञानिक मनोवृत्ति के अभाव के कारण इस तरह की गतिविधियाँ संभव हो पाती हैं। यदि समाज के सभी लोगों में वैज्ञानिक चेतना सम्पूर्ण विचारधारा को अपनाने हेतु प्रेरित किया जाए, तो इन समस्याओं से मुक्ति पाई जा सकती है।

आतंकवादी समस्या के अतिरिक्त एक और वैश्विक समस्या है नस्ली हिंसा। नस्ली हिंसा सामाजिक जीवन एवं लोकतांत्रिक व्यवस्था के समक्ष एक गंभीर चुनौती के रूप में उत्पन्न हुई है। इसके मूल में नस्ली हिंसा करने वाले युवाओं के मन में यह भाव विद्यमान रहता है कि विकास का समुचित लाभ स्थानीय लोगों को नहीं मिल पाता है। इसका लाभ पूँजीपति, उद्योगपति एवं बिचौलिये ही प्राप्त करते हैं। इन आंदोलनों में

दिग्भ्रमित युवाओं एवं अन्य सदस्यों द्वारा व्यापक पैमाने पर हिंसा की जाती है। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि इन नस्ली हिंसा के समर्थक लोगों में न तो कोई वैचारिक दृष्टिकोण रहता है और न ही जीवन मूल्यों के प्रति कोई प्रतिबद्धता। ये लोग हिंसा के माध्यम से अपने संकुचित दृष्टिकोण पर आधारित सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था स्थापित करना चाहते हैं। उल्लेखनीय है कि वैज्ञानिक मनोवृत्ति की चेतना के प्रसार द्वारा इस प्रकार की समस्याओं पर स्थायी रूप से नियंत्रण किया जा सकता है।

तकनीकी विकास के फलस्वरूप जहाँ मनुष्य को अनेक भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध हुई हैं, वहीं अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। इन चुनौतियों में साईबर अपराध की चुनौती महत्वपूर्ण है। साईबर अपराध वह अपराध होता है जिसमें तकनीकी संसाधनों यथा–इंटरनेट, कंप्यूटर, मोबाइल फोन या किसी डिजिटल प्रणाली का प्रयोग करके अपराध को अंजाम दिया जाता है। साईबर अपराध कई प्रकार के हैं–जैसे साईबर स्टॉकिंग, साईबर बुलिंग, डॉक्सिंग, फिशिंग एवं ऑनलाइन यौन–शोषण आदि प्रमुख हैं। अतः इस चुनौती का सामना तकनीकी उपकरणों के साथ–साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर किया जा सकता है। साईबर अपराध के इस दौर में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अर्थ है डिजिटल संसार में तर्कसंगत प्रश्न करने की आदत, साक्ष्य–आधारित जाँच और सतर्कता को अपनाना। यह अंधविश्वास से मुक्ति और तकनीकी समझ के माध्यम से हैकिंग एवं अन्य आर्थिक धोखाधड़ी को रोकने में सहायता करती है।(5)

आधुनिक युग में तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप मनुष्य ने विकास के नए प्रतिमान स्थापित किए हैं, सम्पूर्ण विश्व एक गाँव के रूप में परिवर्तित हो गया है। विकास के इस वातावरण में मनुष्य को जहाँ सुविधाएँ मिली हैं, वहीं उसके मानवीय दृष्टिकोण में कमी भी आई है। इस संदर्भ में अनेक वैश्विक चुनौतियों का उल्लेख करना प्रासंगिक है। प्रकृति प्रदत्त भौतिक साधनों के दोहन के लिए विश्व के देशों में होड़ सी मची हुई है। इतना ही नहीं, प्राकतिक साधनों पर नियंत्रण के लिए शक्तिशाली देशों द्वारा अपेक्षाकृत कमजोर देशों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया जा रहा है। वर्तमान संदर्भ में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा वेनेजुएला के तेल संसाधनों पर अपना नियंत्रण स्थापित करना महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार विभिन्न देशों के मध्य यथा रूस–यूक्रेन युद्ध एवं मध्य–पूर्व में युद्ध मानवता के खिलाफ अपराध हैं। वास्तव में युद्ध संकुचित मनोवृत्ति का परिणाम है। उल्लेखनीय है कि सम्पूर्ण वैश्विक व्यवस्था के संचालन के लिए अनेक अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ, जो विश्व के देशों के बीच आपसी सहमति के फलस्वरूप अस्तित्व में आई थीं, का प्रयोग किसी भी संकट के समाधान के लिए किया जा सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि वैज्ञानिक मनोवृत्ति अपनाकर किसी भी समस्या का समाधान किया जाना उचित होगा।

विश्व में शांति एवं विकास के लिए संस्थागत एवं व्यक्तिगत प्रयास किए गए हैं। इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना 1945 में अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए की गई थी। इसका उद्देश्य संगठन के देशों के बीच संघर्ष को रोकना, मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों

को बढ़ावा देना और मानवाधिकारों की रक्षा करना था। संयुक्त राष्ट्र संगठन की एक महत्वपूर्ण संस्था यूनेस्को है, जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक सोच, तार्किक दृष्टिकोण और जिज्ञासा को बढ़ावा देना है। इसके अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान परिषद, विश्व विज्ञान अकादमी और विज्ञान संवादात्मक संगठन जैसे संगठन वैज्ञानिक सोच के वैश्विक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि भारत में वैज्ञानिक मनोवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए संस्थागत एवं वैयक्तिक स्तर पर शैक्षणिक, अनुसंधानात्मक एवं नवाचार कार्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इन प्रमुख पहलों में–विज्ञानधारा, इंस्पायर, के.एम.पी. और इंडिया साईंस जैसे कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।(6)

इन कार्यक्रमों में इंस्पायर योजना का महत्वपूर्ण स्थान है। यह योजना भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा संचालित है, जिसमें छठवी से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों को नवीन विचारों के लिए दस हजार रूपये का पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इंस्पायर (INSPIRE) योजना का मूल उद्देश्य यह है कि प्रारम्भिक स्कूली बच्चों और युवाओं में कम उम्र से ही विज्ञान के प्रति अभिरूचि एवं आकर्षण पैदा करना और उन्हें वैज्ञानिक अनुसंधानों के प्रति जागरूक करना। इस योजना का उद्देश्य वैज्ञानिक प्रतिभा को पहचानना, अनुसंधाान को बढ़ावा देना तथा वैज्ञानिक मानव संसाधन का निर्माण करना है। वैज्ञानिक चेतना के प्रसार के लिए सरकार द्वारा के.ए.एम.पी. (Knowledge and Awareness Mapping Platform) योजना महत्वपूर्ण है। यह अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक ई–आधारित मूल्यांकन मचं है। CSIR-NISTADS की यह पहल कक्षा पाँच से कक्षा दस तक के छात्रों में वैज्ञानिक चिंतन, रचनात्मक कौशल एवं आलोचनात्मक पठन–पाठन तथा 21वीं शताब्दी के कौशल को विकसित करने व मापने के लिए परीक्षाएँ आयोजित करती है। इसका उद्देश्य छात्रों में विज्ञान, गणित, प्रौद्योगिकी और मानविकी के प्रति क्षमता और कौशल का मूल्यांकन करना है। इस कार्यक्रम का महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह छात्रों को रचनात्मकता सीखने एवं उनमें आलोचनात्मक चिंतन विकसित करने में मदद करता है।

भारत सरकार द्वारा वैज्ञानिक चेतना एवं प्रौद्योगिकी के विकास के लिए शुरू की गई विज्ञानधारा एक केन्द्रीय योजना है, जो 16 जनवरी 2025 से प्रभावी हुई है। इस योजना का मूल उद्देश्य अनुसंधाान, नवाचार एवं तकनीकी कौशल को बढ़ावा देना है। इस योजना के तहत तीन प्रमुख क्षेत्रों–विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षमता निर्माण, अनुसंधाान और विकास एवं नवाचार, प्रौद्योगिकी विकास व तैनाती–का विलय किया गया है। इसका लक्ष्य वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देते हुए 2047 तक विकसित भारत के उद्देश्य को प्राप्त करना है और विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग एवं गणित के क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ाना है। इस योजना में विशेष रूप से महिलाओं को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रा में प्रोत्साहित करने पर जोर दिया गया है। उल्लेखनीय है कि इस योजना के अंतर्गत शैक्षणिक एवं अनुसंधाान के लिए विश्वस्तरीय प्रयोगशालाओं का निर्माण और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सुगम बनाना है। इस योजना की उल्लेखनीय बात यह है कि

इसमें वैज्ञानिक सोच और अनुसंधाान के तंत्र को मजबूत करना है। भारत सरकार ने देश के वैज्ञानिक अनुसंधाान और तकनीकी विकास को बढ़ावा देने के लिए एकीकृत योजना विज्ञानधारा क्रियान्वयन के लिए प्रस्तावित परिव्यय 15वें वित्त आयोग के अनुरूप 2021–2022 से वर्ष 2025–2026 की अवधि के लिए 10579.84 करोड़ रूपये आवंटित किए हैं। यह धनराशि राष्ट्रीय प्रगति के आधार के रूप में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

यहाँ यह तथ्य भी महत्वपूर्ण है कि भारतीय संविधान में वैज्ञानिक सोच को एक मूलभूत कर्त्तव्य के रूप में वर्णित किया गया है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 'क' मूल कर्त्तव्य में वर्णित है कि–भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और सामाजिक सुधार की भावना का विकास करे। उल्लेखनीय है कि वैज्ञानिक मनोवृत्ति को एक जीवन शैली के रूप में स्वीकार किया गया है। इस जीवन शैली में चिंतनशीलता, प्रमाणों को स्वीकार करना तथा हठधर्मिता को कभी स्वीकार न किए जाने पर बल दिया गया है।(7)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वैज्ञानिक मनोवत्ति को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण पहल की गई है। इस नीति में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए रटने के बजाय आलोचनात्मक सोच, तार्किक प्रवत्ति, जिज्ञासा एवं अनुभव द्वारा सीखने पर बल दिया गया है। इसके प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं– 1–विज्ञान एवं गणित को केवल सैद्धान्तिक रूप से जाना ही आवश्यक नहीं है बल्कि इनें प्रयोगों एवं परीक्षण के माध्यम से सीखने पर बल दिया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 के पाठ्यक्रम में तार्किकता, रचनात्मकता एवं समस्या–समाधान कौशल को एकीकृत किया गया है, ताकि छात्र इसी प्रकार सोचें। नई शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधाान की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रीय अनुसंधाान फाउन्डेशन की स्थापना की गई है। वैज्ञानिक मनोवृत्ति की चेतना को सामान्य मानव के बीच प्रसारित करने हेतु सामाजिक कार्यकर्ता नरेन्द्र दाभोलकर की स्मति में प्रत्येक वर्ष 20 अगस्त को राष्ट्रीय वैज्ञानिक मनोवृत्ति दिवस मनाया जाता है, जो अंधविश्वासों के खिलाफ तार्किक सोच को बढ़ावा देता है।

उल्लेखनीय है कि वैज्ञानिक चेतना के प्रचार एवं प्रसार में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का भी महत्वपूर्ण योगदान है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी 1986 से प्रारम्भ हुआ था। इसका उद्देश्य है कि विज्ञान को जन जीवन से जोड़ना, आम जनता की भलाई के लिए विज्ञान की भूमिका को समझना और विज्ञान के प्रति रूचि को बढ़ावा देना है, इसके साथ ही विज्ञान की भूमिका–स्वास्थ्य, संचार, परिवहन एवं अंतरिक्ष के क्षेत्रा में बढ़ावा देना। इसके साथ ही विज्ञान का प्रयोग शांति के क्षेत्र में करना वैज्ञानिक मनोवृत्ति की पहली एवं अनिवार्य शर्त है। मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसी पहलों को सशक्त करने के लिए अनुसंधाान एवं नवाचार को बढ़ावा देना है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 की थीम–विकसित भारत के लिए विज्ञान एवं नवाचार में भारतीय यवुाओं का सशक्तिकरण–रखा

गया है। इस थीम का उद्देश्य भारतीय युवाओं को विज्ञान और नवाचार में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए सक्षम एवं प्रेरित करना है ताकि भारत एक विकसित राष्ट्र बन सके। वैज्ञानिक चेतना के प्रसार के लिए विज्ञान दिवस के अवसर पर स्कूलों एवं कॉलेजों में विज्ञान प्रदर्शनियों एवं नवाचार प्रतियोगिताओं को बढ़ावा देकर छात्राों को अनुसंधाान एवं प्रयोगों के लिए प्रेरित करना है। इसका उद्देश्य यह है कि विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं तक ही नहीं सीमित रहना चाहिए, बल्कि इसे देश और समाज के विकास में प्रभावी रूप से प्रयोग किया जाना चाहिए। अतः यह कहना उचित होगा कि वैज्ञानिक मनोवत्ति सम्पूर्ण जगत के लिए एक नवीन दृष्टिकोण है, जो उसके अस्तित्व एवं विकास के लिए आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है। यह चराचर के अस्तित्व एवं विकास के लिए कालजयी विचारधारा है।

संदर्भ

1. पं0 जवाहरलाल नेहरू : भारत एक खोज।
2. श्री गोपाल शर्मा : मिथकों से विज्ञान से विज्ञान की ओर।
3. कुलीप गैरोला : चुटकी में विज्ञान।
4. जी0 टी0 नारायण राव : वैज्ञानिक स्वभाव।
5. भारतीय संविधान।
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।
7. भारत 2025, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा प्रकाशित।